इस्लाम में जातिवाद?

इस्लाम एक ऐसा धर्म है जो संपूर्ण मानवजाति का उजाले के मार्ग की दिशा में मार्गदर्शन करता है। और इस में समाज के हर वर्ग के व्यक्ति के लिए जीवन व्यतीत करने का एक सुंदर एवं प्रभावशाली ढंग है जिस पर चल कर अपने जीवन को सुहाना बनाया जा सकता है। परंतु इस छल और कपट से भरे संसार में कुछ ऐसे व्यक्ति भी हैं जो इस प्रशंसनीय घर्म की छवि को बिगाड़ने की लगातार कोशिश करते रहते हैं। इसी प्रकार के असमाजिक तत्वों ने जहाँ कई अभद्र टिप्पणी कीं वहीं इस सचाई से भरे घर्म पर बहुत सी आपत्तियाँ भी करीं। यह सब करने में उनका लक्ष्य मात्र एक है, और वह है सामान्य जनता के ह्रदय में इस्लाम की नफ़रत। इसी गलत मानसिकता के चलते यह लोग अब तक बहुत से लोगों के मन में घृणा के बीज बो चुके हैं। परंतु यदि समाज के शिक्षित और न्यायप्रिय लोग आगे आ कर एक स्वस्थ और विकासशील समाज के निर्माण में योगदान दें और इस में अपना भाग अदा करें तो सकारात्मक बदलाव आ सकता है।

बहुत से ऐसे भी लोग हैं जिन्होंने कभी स्वयं इस्लाम धर्म की पुस्तकों को नहीं पढ़ा और न ही किसी इस्लाम के ज्ञानी मुस्लिम से वह मिले होते हैं। तो इन्हें जो कुछ भी बताया जाता है यह उस ही पर विश्वास कर लेते हैं। हालांकि अगर यह स्वयं इस्लामी पुस्तकों को पढ़ते तो सत्य जान जाते। मुझे उम्मीद है कि इस लेख को पढ़ने वाले व्यक्ति न्यायप्रिय होगें ओर सत्य को जानने के बाद कभी असत्य का साथ नहीं देंगे।

विश्व में कुछ ऐसे घर्म हैं जिन में मनुष्यों में उन की जाती के आधार पर अंतर किया जाता है और समाज को वर्गों में विभाजित किया जाता है। इस विभाजन से अक्सर वह लोग प्रभावित होते हैं जिन्हें निचले वर्ग में रखा जाता है। लेकिन पुरे उत्तरदायित्व के साथ मैं अपने पाठकों को इस सत्य से अवगत कराना चाहूंगा कि इस्लाम धर्म में इस या किसी भी प्रकार का कोई जातिवाद

नहीं है। और न ही किसी मानव को मात्र एक जाति विशेष से होने के कारण पिछड़ा या निचला कहा गया है। और अगर आज हम भारत में मुस्लिम समाज को किसी तरह जातियों में विभाजित देखते हैं तो यह यहां के लोगों की अपनी एक राजनीतिक बात है और इसका इस्लाम धर्म से कोई संबंध नहीं है, इसी के साथ यह भी याद रहे कि वह लोग जो इस्लाम की विचारधारा से विपरीत जा कर ऐसा कर रहे हैं वह बहुत ही कम हैं जबकि पूर्ण रूप से इस्लाम को मानने वाले किसी जाति विशेष को पिछड़ा या निचला नहीं समझते। कारण यह है कि इस्लाम की धार्मिक पुस्तक क़ुरआन में यही शिक्षा दी गयी है कि पैगंबर (अलैहिस्सलाम) के समस्त उम्मतियों में किसी को भी एक जाति विशेष का होने के कारण बाकी लोगों पर महत्ता प्राप्त नहीं है। और न ही किसी को मात्र एक जाति विशेष से होने के कारण पिछड़ा या निचला दर्जा दिया गया है। अब इस्लाम धर्म की सब से महान पुस्तक क़ुरआन से उन आयतों को पढ़िए जो मेरी बात की सच्चाई की साक्ष्य हैं।

- **"ऐ लोगों! हमने तो तुम सबको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और हम ही ने तुम्हारे कबीले और बिरादरियाँ बनायीं ताकि एक दूसरे की पहचान रखो, इसमें शक नहीं कि ख़ुदा के नज़दीक तुम सबमें बड़ा इज़्ज़तदार वही है जो बड़ा परहेज़गार हो, बेशक ख़ुदा बड़ा जानने वाला ख़बरदार है" (49:13)**

- **"और तुम सब के सब (मिलकर) ख़ुदा की रस्सी मज़बूती से थामे रहो और आपस में (एक दूसरे) के फूट न डालो और ख़ुदा का एहसान अपने ऊपर याद करो जब तुम में बैर था तो उसने तुम्हारे दिलों में मिलाप कर दिया तो तुम उसके फ़ज़ल से आपस में भाई भाई हो गए.." (3:103)**

और इसी तरह इस्लामी कानून के अनुसार भी निर्णय लेने में किसी जात पात का ध्यान न किया जाए बल्कि सब को बराबर न्याय दिया जाए।

- **"ऐ ईमान वालों! ख़ुदा तुम्हें हुक्म देता है कि लोगों की अमानतें अमानत रखने वालों के हवाले कर दो और जब लोगों के बाहमी झगड़ों का फ़ैसला करने लगो तो इन्साफ़ से फ़ैसला करो (ख़ुदा तुमको) इसकी क्या ही अच्छी नसीहत करता है इसमें तो शक नहीं कि ख़ुदा सबकी सुनता है (और सब कुछ) देखता है" (4:58)**

- **"ऐ ईमान वालों! (तुम में किसी क़ौम का) कोई मर्द (दूसरी क़ौम के मर्दों की हँसी न उड़ाये मुमकिन है कि वह लोग (ख़ुदा के नज़दीक) उनसे अच्छे हों" (49:11)**

अब आइए पैगंबर हज़रत मुहम्मद (अलैहिस्सलाम) कि दी गई शिक्षाओं को देखते हैं जिन में आपसी भाईचारा, सौहार्द और प्रेम का संदेश मिलता है।

हज के एक विशेष दिन जब आप के सामने लाखों की संख्या में लोग उपस्थित थे, आप ने यह शिक्षा दी:

- **"लोगों! तुम्हारा रब एक है (अर्थात अल्लाह) और तुम्हारा पिता भी एक है (अर्थात आदम अलैहिस्सलाम) तो याद रखो! किसी अरबी को किसी अजमी (अर्थात अरब से बाहर रहने वाला) पर और किसी अजमी को किसी अरबी पर और किसी गोरे को काले पर और काले को गोरे पर सिवाय परहेज़गारी के, कुछ उच्चता नहीं"** (मुसनद अहमद बिन हंबल)

यहाँ पर एक बहुत ही सुंदर शिक्षा पूरे समाज के लिए है कि उच्चता किसी जाति विषेश में जन्म लेने से नहीं बल्कि परहेज़गारी और अच्छे कर्म करने से है।

- एक और जगह आप (अलैहिस्सलाम) ने आपसी विश्वास की महत्वपूर्ण शिक्षा दी। आप फ़रमाते हैं: **"मुसलमानों की मिसाल इमारत की तरह है जिस का हर अंश दुसरे को मज़बूत किये हुए है (फिर आपने अपने दोनों हाथों की उंगलियां एक दूसरे में मिलाकर दिखाईं।)"** (बुख़ारी व मुस्लिम)

यह समस्त बातें जो मैं ने इस्लाम की धार्मिक पुस्तकों सें आपको समक्ष प्रस्तुत की हैं यह बिल्कुल सत्य हैं और जिसे किसी प्रकार का कोई संदेह हो वह अस्ल किताबों में देख सकता है और चूंकि हम यहां सत्य की बात करने आए हैं इसलिए अपने साक्ष्यों में कसी प्रकार का असत्य हमारी द्रष्टि में निन्दा का पात्र है।

इन साक्ष्यों और प्रमाणों के आधार पर अब हर न्यायप्रिय मनुष्य यह कहने में बिल्कुल संकोच नहीं करेगा कि इस्लाम धर्म में जातिवाद का कोई अस्तित्व नहीं है। और मेरे पाठक विश्वास करें कि दुनिया में इस्लाम मानव अधिकारों का सब से बड़ा रक्षक है और अपनी शिक्षाओं में इसने मानवजाति को एक ही पिता की संतान कह कर मानो उसे एक ही परिवार कहा है। समाज के शिक्षित वर्ग अर्थात हमें और आप को आगे आकर सकारात्मकता के प्रचार का उत्तरदायित्व उठाना होगा ताकि यह देश विकास की ओर बढ़े और इसके नागरिक सौहार्द और सुख शांति के साथ रह सकें। इसी के साथ मैं अपनी वाणी को विराम देना चाहूंगा।

एक सामान्य भारतीय नागरिक,

फरदीन अहमद ख़ान रज़वी

पीलीभीत, उ. प्र. भारत,